2. प्रबंधकीय लेखांकन के उद्देश्य

Objectives of Managerial Accounting

1. न्यूनतम प्रयासों से अधिकतम परिणाम प्राप्त करना (Achieving maximum results with minimum Effort) — प्रमुख यहां व्यापार के उद्देश्यों पर आधारित होते हैं जिनमें यहां प्रयास किया जाता है कि कम से कम प्रयास लागत व समय में अधिक से अधिक परिणाम प्राप्त किए जा सकें। अन्य शब्दों में उपलब्ध मानवीय एवं भौतिक संसाधनों के प्रयोग से अच्छे से अच्छे परिणाम को प्राप्त करना ही प्रबंध का मुख्य लक्ष्य होता है।

2. नियुक्त कर्मचारी का विकास करना (Developing appointed employees) — नियुक्त कर्मचारी समाज के अंग होते हैं इनके विकास से ही समाज का विकास हो सकता है प्रत्येक उपक्रम संगठन एवं व्यवसाय का उद्देश्य भी लाभ प्राप्त कर समाज का विकास करना होता है इस प्रकार प्रबंध एवं प्रयास करना है कि कर्मचारी व नियुक्ति वर्ग का विकास अधिक से अधिक हो सके इस हेतु श्रम पूंजी के मध्य समन्वय कर्मचारी प्रशिक्षण पदोन्नति एवं परिश्रमिक तथा संगठन के विकास की योजना से संबंधित कार्य करना प्रबंध का उद्देश्य होता है।

3. श्रम एवं पूंजी में समन्वय बनाए रखना (Maintaining coordination between labour and capital) — किसी भी उपक्रम के दो प्रमुख वर्ग होते हैं 'एक' श्रम जो उपक्रम के कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा जिसके हाथ में शक्ति होती है तथा दूसरा 'पूंजी' जो उपक्रम को संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है इन दोनों के मध्य संतुलन सामान में होना आवश्यक है समन्वय व संतुलन के बिना उपक्रम बिगड़ सकता है प्रबंध इन दोनों के मध्य सदैव अच्छा काम करता है।

4. लक्ष्यों की प्राप्ति (Achievement of goals) — किसी भी संगठन की स्थापना के कुछ उद्देश्य आवश्यक होते हैं इनको प्राप्त करने के लिए ही प्रबंध विभिन्न कार्य करता है यह लक्ष्य कुछ भी हो सकते हैं, यहां हम व्यवसाय लक्ष्यों की ही बात करेंगे अतः व्यवसाय के लक्ष्यों को प्राप्त करने के उद्देश्य से ही प्रबंध को संगठित किया जा सकता है।

5. सामाजिक न्याय एवं मानवीय विकास (Social justice and human development) — एक प्रभावी प्रबंध समाज में समृद्धि लाता है, उन्नत परिश्रमिक कार्य की उत्तम दशाएं व अन्य सुविधाओं से कर्मचारियों का विकास तो होता ही है साथ साथ इससे श्रेष्ठ उत्पादन की परिकल्पना कर समाज के विभिन्न स्रोत को विकसित भी किया जा सकता है।

****